आर्थिक समृद्धि का साधन मुर्गीपालन

भारत में खेती के अलावा पशुपालन व्यवसाय भी अपना एक महत्व रखता है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात पशुपालन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई और मुर्गी पालन व्यवसाय ने अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त कर लिया है। इस व्यवसाय द्वारा छोटे एवं मध्यम वर्ग के किसानों को पूंजी शीघ्र ही नियमित रूप से प्राप्त हो जाती है और घर के पिछवाड़े में आसानी से 20-30 मुर्गियों को रखा जा सकता है।

मुर्गियां 18 सप्ताह की उम्र के बाद से अण्डा देना आरंभ करती है तथा लगभग 72 सप्ताह तक अण्डा देती रहती है परन्तु लगभग एक वर्ष बाद अण्डे की मात्रा कम हो जाती है अर्थात प्रथम एक वर्ष के बाद अण्डे की मात्रा कम हो जाती है। प्रथम एक वर्ष तक तो अण्डा उत्पादन का प्रतिशत 80 से 85 प्रतिशत कि हो जाता है। एक अच्छी अण्डे देने वाली मुर्गी की पहचान यह है कि उसकी कलंगी लाल रंग की होती है। आंखो में चमकीलापन तथा पंजे लाल पीले होते है। किसी भी मुर्गी को अण्डे देने वाली अवस्था में संतुलित आहार देकर रोगों से बचाव कर उससे अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

मुर्गियों की आवास व्यवस्था :-

स्थान का चुनाव :- मुर्गी शाला के लिए स्थान का चुनाव निम्न बातों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए: -

1. आवास हमेशा सुरक्षित स्थान पर होना चाहिए जहां पर उनके प्राकृतिक शत्रु जैसे कुत्ता, बिल्ली, सांप व नेवला की पहुंच न हो।
2. मुर्गियों का आवास हमेशा बस्ती या गांव से दूर होना चाहिए।
3. सूर्य का प्रकाश पर्याप्त मात्रा में मिलता रहना चाहिए एवं प्रत्येक मुर्गी को रहने के लिए पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए।
4. आवास ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहां पर श्रमिक आसानी से उपलब्ध हो सकें साथ ही जहां पर माल की बिक्री भी आसानी से हो सके।
5. मुर्गी फार्म के लिए स्थान का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वहां पर यातायात के साधनों की उपलब्धता आसानी से हो सके।

आवास व्यवस्था :-

अ. पिंजरा या दड़बा प्रणाली :-

इस प्रणाली में लोहे के मोटे तार द्वारा बने हुए पिंजरे में 2-3 मुर्गियों को एक साथ रखा जा सकता है तथा सामने की और पानी व दाने की व्यवस्था की जाती है पिंजरे का फर्श ऐसा होता है कि अण्डा लुढ़क कर सामने निर्धारित स्थान पर आकर रूक जाता है तथा टूटता नहीं है। एक हवादार मकान में 2-3 मंजिल तक के केज बनाए जाते है। मुर्गी की बीठ नीचे गिरती रहती है जिसको समय-समय पर साफ किया जाता है या नीचे ऐसे गड्ढे बनाए जाते है ताकि आसानी से बीठ उठाई जा सके। इस विधि में बीमारी अधिक नहीं फैलती है तथा आहार का खर्चा भी अधिक नहीं होता है।

2. डीप लीटर प्रणाली :- इस प्रणाली में मुर्गीघर में लीटर (बिछावन) बिछाकर पक्षियों को रखा जाता है। इसमें मुर्गी पूरे घर में सवेच्छा पूर्वक घूमती रहती है। घर में मुर्गी के खाने, पीने व अण्डे देने की पूर्ण व्यव्स्था प्रति 10 फूट की दूरी पर होती है। लीटर (बिछावन) हेतू मूंगफली के छिलके, चावल का भूसा, गेहूं का भूसा, कुट्टी एवं लकड़ी का बुरादा आदि प्रयोग किया जाता है। लीटर बिछाने से अभिप्राय मुर्गी की बीठ की नमी को सोखने से होता है। एक लेयर (अण्डे देने वाली मुर्गी) के लिए डीप लीटर प्रणाली के अंतर्गत रखे जाने पर प्रति पक्षी 2 से 2.5 वर्ग फुट स्थान की आवश्यकता होती है तथा एक ब्रायलर पक्षी के लिए 0.75

से 1 वर्ग फुट प्रति पक्षी के लिए 0.75 से 1 वर्ग फुट प्रति पक्षी स्थान की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली में उचित तापमान 45 डिग्री से 47 डिग्री फॉरनेहट होता है। इस तापमान पर अण्डा उत्पादन ठीक रहता है, इससे अधिक तापमान होने पर अण्डों की संख्या कम व आकार छोटा हो जाता है। सामान्यत: डीप लीटर प्रणाली के अंतर्गत मुर्गीघर में 40-70 प्रतिशत नमी रहनी चाहिए। इस प्रणाली में मुर्गीघर में रोशनदान की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वांछित स्वस्थ हवा की प्राप्ति व अशुद्ध हवा के निकलने के लिए पर्याप्त स्थान हो।

मुर्गियों का भोजन :- मुर्गियों के दांत नहीं होते हैं। इस प्रकार भोजन पीसने, चबाने के सभी कार्य आमाशय ही करता है। अत: मुर्गी के आहार में बारीक अनाज, खलियां, मछली चूर्ण, अस्थि चूर्ण, दूध के उत्पाद, लवण मिश्रण खिलाने चाहिए। मुर्गियों के भोजन का संतुलित होना बड़ा आवश्यक है। मनुष्यों की भांति इनके भोजन में वसा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, लवण, विटामिन तथा पानी का होना अति आवश्यक है। इसकी पूर्ति के लिए सोयाबीन देना लाभदायक हैं। सोयाबीन से प्रोटीन, वसा एवं अमीनो अम्ल उचित मात्रा में मिल जाते हैं। ग्रीष्म काल के अण्डा देने वाली तथा ब्रायलर मुर्गियों को अत्यधिक रेशे वाले पदार्थ नहीं खिलाने चाहिए, इनके खिलाने से अण्डा उत्पादन तथा मांस उत्पादन कम हो जाता है। आहार के लिए तालिका देखें।

पानी का प्रबन्धन :- मुर्गियों के लिए पीने के पानी का प्रबन्ध करना बड़ा आवश्यक है क्योंकि सभी प्रकार के पक्षियों के लिए पानी आवश्यक तत्व है। साथ ही अण्डे की संरचना में पानी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। पानी खाने को सरल रूप देने तथा ग्रास नलिका में खाने का वाहक का कार्य करता है। पाचन में सहायता के साथ-साथ फेंफड़ों तथा वायु के द्वारा मुर्गियों को ग्रीष्म काल में ठण्डक प्रदान करता है। 100 ब्रायलर के लिए 20 लीटर पानी की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। मुर्गियों के अच्छे उत्पादन के लिए अच्छे एवं सुस्वाद जल का प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होना अतिआवश्यक है। किसी भी दशा में पानी की कमी नहीं होनी चाहिए। पानी का ढका हुआ होना चाहिए तथा बर्तन ऐसे होने चाहिए जिन्हें सुगमता से साफ किया जा सके व पक्षी पानी के बर्तन को गिरा न सके। पानी के बर्तन के रूप में कई उपकरण काम में लाए जाते है जैसे फाउन्टेन टीन या मिट्टी के छेद वाले बर्तन, लोहे, ताम्र, चीनी, एल्युमिनियम अथवा मिट्टी के बर्तन, पानी की नाली आदि।

चोंच काटना :- पक्षियों के कैनाबोलिज्म या सजातीय भक्षण गुण पाया जाता है। पक्षी एक दूसरे के पंख नोंचते है या पूंछ नोचते है या पंजे खा जाते हैं अथवा गुदा द्वार व अन्य भागों पर चोंच मारते है। कैजाबोलिज्य प्राय: कम स्थान पर अधिक पक्षी पालने के कारण होता है। इस समस्या के निराकारण का उत्तम उपाय डिबीकिंग हैं। जिसमें डी.सी. का या चोंच काटने वाली मशीन के द्वारा पक्षी की चोंच काट दी जाती है।